

नरूपप्रवाचशाधसूयजागदो

उदयपतिजतिमयनभीजागः

येभलपमु॥ ॥ उ सर्वदवगनादि

हृदीनोक्षगधार्वासनगनु

विष्णुनीमाउनीआकाशनी

गगनादुर्वदगनि

को॥ उ

कागहाकात्रस्वाहा॥ गानन

सूयमा॥ ममक्रिधनसखीनसनु

पुसुनचाय॥ खलेचंदनः जंशसुगलसंग

ममवांछितर्कनूयनमस्वाहा॥ ॥ खले

उंनमागुनूदा॥ सविनदकधयानुग

वायात्रयभरूपमाय

दि

स्वाहा ॥ ध्वं धियां व्रजापय ॥ ध्या
 पंचसुगंधकं ४ पुष्पा ॥ ३१ या नाम क्रि धन ॥ पि
 जो डाव ध्वं मुं पदन पावः ध्या सुनिन ॥ मि
 ॐ हं ह्रीं हूं हं दवता ॐ कामि च राय स्वाहा ॥ आ स वाय मु
 ल सा ए कु सिला ति न के च के ॥ मि रुन नं वाय शल सा मा हा
 ग सिला ति न के च के ॥ या व ह न या पु ॥ कृ सि कृ

हं ४ स स्वा न या पु हं स्तान १० आ दित्य वान कु कु
 वं च क न न के ध व क वि रु न के ॥ न न स क
 उ का प ल का मं र श्री न जि स्वा न ० ह न नं धु ति ध व य
 ग या मा द ४ ० ला वः स्थि ४ जी ग या य ४
 ॐ सि दि गुरु या ग्या ॐ दे व दे रे हे मा ला म
 हं कं त स्वा हा ॥ ध मु न व रा प च न व
 कि ग व त १ त मा र न ह ल ॥ ॥

बुद्धम



मिमांसा
हायक
मि. ३।
तस्य
स
थ
नाप
मिमांसा

जिह्वगुलि
नहवही
ननुग्याउस
गुग्याउस
लाहसता
कलातव
मयथुनित
चानेलायि

देवद
योमचना

रुद्रपुत्रसुगवनाचंदनकुंज
कूमनसखिसचायारुद्र
उसनाहाथनचस्यस
रुद्रदा



कुं कुं मनेरुपुत्रसुगवनाचंदनकुंज
नेशनसंगवः चस्य ॐ पुनस्याकया पाठसम
प्रागस्याकयाः गवयगवाननकावया ॥
यस्यनकोवस्ययदुतदि दंत्यावका

ॐ
ॐ देवद
ॐ लिलिलिल
ॐ

तुलारुद्र आयेते हे पृथ्वी ॥ तेरा विलाया का कार्य न हो
लेना देना का कार्य विला है ते लोका समान ते सरभ
नाम आयेते हे पृथ्वी ॥ आपना अक्षित को काम विलायत
र करोत व तेरा काम सिद्ध हो गा ॥ तेरा काम विलायत ते
या का ग्रह धि है ॥ तेरा अग्नि का न यहो गा है ॥ न न न
वर्ध हो गा ॥ ग्रह द कि मि काम प्रस्था को है ॥ व
त को गु री दिया सु ॥ प षे रु ले पू ता कि या
ल किया सु तव अ राम हो गा ॥ ६ ॥ धन

तेरा विलाया कार्य न हे म क का
म या सु लो काम हो गा ॥ ग्र को काम प्र
व संपति हो गा ॥ दोष पु वृ त गु न क्षेम कुरु लो
व ता लाई ना वि रा या को द ॥ तेरा अग्नि का
लक्ष रा त्र प्र सा द हो ला दा म किया सु तव न के
म कुलग्न आयेते हे पृथ्वी ॥ तेरा विलाया कार्य न हो
तेरा राज को व ह त आ ग दी द्वा ना स काम वृ मि वारि दि
तेरा नि व धन व ति हो गा ॥ तेरा विलाया कार्य न हो दि

पुष्पं पुष्पं नलोत्तमं वराकलहं धीरतया ॥
योषं विदुः किनि कोऽपका लुकि याम या न
तस्को प्रजा वि. याम उपा तपु त रित गाया को र्हे र्हे
कि यासु त कानि को हो ला ॥१०॥ के न को ष श्रा तो त हे
ते रा चित रा चित या का र्थ सी धि र्वा दो लो तत्र
ल धि र्वा रे की या या सः धन क्षि ला न हो ला
गृहे को का म पु र्वा त न लो र्वा दो ष पु र्वा त न
अ त को म ष प र्वा त लो जा वो कि या स

जल का दिा चे ज्ञा ई पश्चिम दि सा को
पाता को ला ई उ त व रिा को हो ला ॥ ११ ॥
पु र्वा क ॥ ते रा चित रा या का र्थ रा वै क न लो कि
ना फा हो लाः राज पु ता र पा र गा र या को का
या स त व सृ ष पा र्वा त गाः गृहे को का म को र्हे र्हे
व न पु र्वा त न लो लाः दो ष प र्वा त न लो र्वा दो ष
ते पि रा या को र्हे त स को आ व कि या स त व रिा को
इ ति आ रा म च रि आ म रा न य ति स ॥ ॥

